तिब्बती लोकतन्त्र स्थापना की ६०वीं वर्षगांठ के अवसर पर निर्वासित तिब्बती संसद का वक्तव्य*

आज तिब्बती पञ्चाङ्कानुसार वर्ष २१४७ १७ लोह (धातु)- मूषक वर्ष के ७वाँ मास (डोशिन दावा) कृष्ण पक्ष पञ्चदश के दिन तदानुसार वर्ष २०२०, ०२ सितम्बर है। यह एक महत्वपूर्ण दिन है, परम पावन जी के अद्भुत वैयक्तिक विशेषता, शक्ति व कृपा दृष्टि के कारण निर्वासित तिब्बती राजनीति में सम्यक लोकतान्त्रिक राजव्यवस्था के रूप में स्थापित हुये साठ वर्ष पूर्ण हो गया है। और आज हम सभी इस वर्षगांठ को मना रहे हैं। इस महत्वपूर्ण अवसर पर परम पावन १४वें दलाई लामा जी को समस्त तिब्बती जनताओं की ओर से साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुये आभार व कृतज्ञता अर्पित करता हूँ। निर्वासित तिब्बती संसद की ओर से मैं तिब्बत व तिब्बती जनता को सहयोग करने वाले दुनिया भर के सरकारें, संसद, सभी तिब्बत समर्थक संगठनों इत्यादि विश्व के शान्ति पसन्द समस्त जनताओं तथा तिब्बत के भीतर और निर्वासन, दोनों जगहों पर रहने वाले अपने प्यारे तिब्बती साथियों को मैं हार्दिक अभिनन्दन और शुभकामनायें देता हूँ।

लोकतान्त्रिक व्यवस्था में मानव जाति सम्बन्धी ऐतिहासिक घटनाओं में उत्पीड़न, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, जाति इत्यादि मानव समाज में श्रेष्ठ-तुच्छ भेदभाव वाली मानसिकता को समाप्त करता है। साथ ही इसमें सभी के प्रति समानता की विचारधारा के आधार पर समस्त जनता के हितों और चिन्ताओं को ध्यान में रखते हुये व्यवहार होता है। ऐसे व्यवस्था को आम जनता पसन्द करते हैं, वास्तव में इस तरह के महान आदर्श व्यवस्था को बनाने हेतु विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के ऐतिहासिक घटनाक्रमों में युद्ध, प्रत्याशी खड़ा करना, संघर्ष आदि का अन्ततोगत्वा उस परिणाम से ही विजय-पराजय का निर्धारित होता है। वास्तव में एक राष्ट्र का सफल होना अथवा लोकतन्त्र शासनशक्ति में बदलने की प्रयत्न करना जारी है। तिब्बती समाज के अन्दर लोकतन्त्र जो है, उसे तिब्बत के धार्मिक व राजनीति नेता परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी के द्वारा जनताओं के संघर्ष, युद्ध इत्यादि के बिना किसी परिश्रम के तिब्बती जनता को उपहार स्वरूप भेंट में मिला है।